हड़प्पा सभ्यता के पतन के उत्तरदायी कारण

डॉ० जिज्ञासा*

हड़प्पा सभ्यता का पतन किसी एक कारण से नहीं बल्कि अनेक कारणों से हुआ। अतः किसी एक मत को स्वीकारना उचित नहीं लगता है। जैसे हड़प्पा–सभ्यता का नागर स्वरूप एक प्रक्रिया का परिणाम था, ठीक उसी तरह इस सभ्यता का पतन एवं रूपान्तरण भी एक प्रक्रिया के तहत ही हुआ एवं इसी के उत्तराधिकारी के रूप में सिन्धु घाटी के पूर्वी एवं उत्तरी भाग पर एक नई संस्कृति का उदय भी होने लगा था और लगभग कुछ सौ वर्षों में यह राजनीतिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र सिन्धु घाटी से गंगा घाटी में स्थापित हो गया। वहीं दूसरी तरफ गंगा घाटी में नगरीकरण की पृष्ठभूमि भी तैयार होने लगी थी। हड़प्पा सभ्यता के नगरों के पतन के उत्तरदायी कारक तत्त्व धीरे–धीरे विभिन्न क्षेत्रों में क्रियाशील होने लगे थे। सैन्धव एवं घग्घर–हाकरा घाटी के केन्द्रीय भू–भाग में जो विस्तृत फैला हुआ व्यापारिक जाल और राजनैतिक परिदृश्य था, वह अब ध ीरे–धीरे परिवर्तित होने लगा। साथ ही पर्यावरण एवं कृषिगत आधार में भी परिवर्तन दिखाई देता है। प्राचीन सरस्वती नदी की धारा जो सामान्य रूप से बहती थी, वह भूगर्भीय हलचल एवं बालू–मिट्टी के जमाव के कारण अपना मार्ग बदल दिया। वह बदला हुआ मार्ग दो तरफ जुड़ा। एक तो पश्चिम में सतलज–सिन्धु के प्रवाह तंत्र में, तो दूसरा पूर्व में गंगाघाटी के मैदान में यमुना में मिल गया।1 अधि ाकाधिक पानी होने के कारण सिन्धु की धारा भी अनियन्त्रित होकर और पूर्व की तरफ बहने लगी जिसकी वजह से कई कस्बे कटकर रेल में दब गये होंगे।2 मोहनजोदड़ों को बाढ़ से बचाने के लिए मिट्टी की कच्ची ईंट की मोटी दीवार बनाई गयी तथा नगर को ऊँचा भी किया गया। लेकिन छोटे गाँव एवं कस्बे नष्ट ही हो गये होंगे। बाढ़ के आने व नदी की धारा निरन्तर बदलते रहने के कारण कृषिगत ढॉचा के साथ ही सैन्धव नगरों की आर्थिक व्यवस्था भी चरमराने लगी थी। यद्यपि हड़प्पा का अस्तित्व बना रहा। परन्तु आर्थिक आधारभूत ढाँचा, दूरस्थ क्षेत्रों में होने वाले व्यापार आदि सभी ध्वस्त होने लगा। इसी के साथ 1900 ई०पू० में विश्व परिदृश्य पर लगभग 100 वर्षों का सूखे का दौर भी चला, दक्षिण भारत को छोड़कर पूरा उत्तरी भारत इससे प्रभावित हुआ। इस सूखे ने भी हड़प्पा सभ्यता की आर्थिक व्यवस्था को ध्वस्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।

***गाँधीनगर, कतीरा, आरा भोजपुर, बिहार–802301**

हड़प्पा सभ्यता के पतन का कोई बाहरी कारण नहीं था, बल्कि पतन का आन्तरिक कारण था, जिसमें नदियों के मार्ग परिवर्तित होने से व्यापारिक सम्पर्क टूटने लगा, बाढ़ एवं सूखे से फसल चक्र असफल होने लगा, जिससे आर्थिक एवं राजनीतिक ढाँचा चरमरा गया। लोग नगरों की तरफ प्रव्रजित हुए, जिससे आबादी घनी हुई, परिणाम स्वरूप राजनीतिक व्यवस्था नगरों के पतन होने की प्रक्रिया के प्रारम्भ में ही समाप्त हो गयी और जो सुव्यवस्था थी, वह अव्यवस्था में बदल गयी। लगभग 1900 ई०पू० के आस–पास क्षेत्रीयकरण के एकता का युग भी समाप्त हो गया। अब पूरे सैन्धव घाटी एवं गुजरात क्षेत्र में तीन सांस्कृतिक क्षेत्र उभरकर सामने आते हैं जिनको उत्तर हड़प्पा कहा जाता है। इनके भौतिक अवशेष, बर्तन, मुद्रायें, शवाधानों आदि में स्पष्ट देखे जा सकते हैं और यह स्थिति करीब 1900 ई०पू० से 1300 ई०पू० तक लगभग 600 वर्षों तक बनी रही। अब नये सामाजिक परिवेश के साथ–साथ नई तकनीक एवं कृषि व्यवस्था स्थापित होने लगी थी। यह सब सैन्धव घाटी के निचले भाग से लेकर पूर्व में गंगा–यमुना घाटी एवं दक्षिणी प्रायद्वीपीय भू–भाग में देखा जा सकता है।3 उपरोक्त तीन सांस्कृतिक क्षेत्र सहित हड़प्पा और उसके पूर्व उत्तर भारत तक। द्वितीय क्षेत्र झूकर चरण जिसमें सिन्धु घाटी के दक्षिणी भाग, सिन्ध एवं बलूचिस्तान का कुछ हिस्सा। तीसरा रंगपुर चरण जिसमें पूरा कच्छ, सौराष्ट्र एवं गुजरात का मुख्य भाग सम्मिलित था।

पंजाब चरण की 'सिमेट्री–एच' संस्कृति जो सर्वप्रथम सन् 1930 में हड़प्पा के उत्खनन में प्रकाश में आयी थी। इसके पात्र शवाधांनो में परिपक्व हड़प्पा के अन्तिम चरण के सादे पात्रों के साथ मिले हैं। 'सिमेट्री–एच' के पात्र लाल रंग के अत्यन्त चमकीले एवं काले रंग के चित्रण से भरपूर हैं। इन पर कुछ मिथक चित्र भी चित्रित है। यहाँ मुख्य बदलाव धार्मिक संस्कारों में दिखाई देता है। हड़प्पा में हुए हाल के शोध कार्यों से ज्ञात होता है कि परिपक्व हड़प्पा संस्कृति से पंजाब चरण तक कैसे क्रमिक संक्रमण एवं रूपान्तरण हुआ। पंजाब चरण के 'सिमेट्री–एच' एवं उससे सम्बन्धित अन्य पात्र जो पूरे उत्तरी पाकिस्तान एवं उत्तर में स्वात घाटी तक फैले हुए थे, जो थोड़ी भिन्नता के साथ स्थानीय परम्पराओं में समाहित हो गये थे। गंगा–यमुना दोआब का क्षेत्र जो उस समय घने जंगलों से आच्छादित था, यहाँ से भी बहुत सारे पुरास्थल प्राप्त हुए है, जो इन बस्तियों के क्रमशः पूर्व की ओर विस्तारित होने का साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।4 यद्यपि तुलनात्मक दृष्टि से पंजाब चरण में विस्तृत भू–भाग शामिल था, किन्तु पश्चिमी पहाड़ी भागों एवं समुद्री क्षेत्र से व्यापारिक सम्बन्ध टूटने लगा था। पंजाब चरण की बसाहटों में लेपिसलेजुली एवं टरक्वॉयज के मानके बहुत मुश्किल से ही मिलते हैं। शंख के आभूषण और धार्मिक वस्तुएँ क्रमशः लुप्त हो रही थी। कार्नेलियन, फियॉन्स जो उच्च तकनीक

से बनाये जाते थे, अब कच्चे माल के अभाव में उनका उत्पादन सम्भव नहीं था।

1996 में हड़प्पा के उत्खनन से एक छोटा सा मिट्टी का पात्र पंजाब चरण का मिला है, जिसकी तिथि 1730 ई०पू० के लगभग प्राप्त हुई है।5 इस पात्र से 133 मनके व अन्य वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। इनमें से अधिकांश मनके पूर्ववर्ती चरण से सम्बन्धित नहीं है, जो पंजाब चरण के क्रमशः बदलाव की ओर इंगित करते हैं। इसी पात्र से लाल–भूरे रंग का कॉच का मनका प्राप्त हुआ है, जो कॉच बनाने का सैन्धव घाटी से प्राचीनतम् प्रमाण है और यह भी ज्ञात होता है कि यह स्थानीय तौर पर बनाया जाता था। ठीक ऐसे ही कॉच के मनके प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल में पूरे उत्तरी भारत में आम प्रचलन में थे। एक अन्य महत्त्वपूर्ण मनके का साक्षय है, जो तॉबे की नलिकाकार ड्रिल से छेदा गया है। हड़प्पा सभ्यता में छिद्र करने के लिए कॉपर ड्रिल बीट का प्रयोग तो होता था, लेकिन इस तकनीक का प्रयोग बड़े रिंगस्टोन में छिद्र करने के लिए। परन्तु यहाँ पर मनके में छिद्र करने के लिए कॉपर की नलिकाकार तकनीक प्रयोग में लायी गयी है, जो अर्नेस्टाइल ड्रील बीट के उत्तराधिकारी के रूप में यह नई तकनीक स्थान ले रही थी। ऐसे ही अन्य क्षेत्रों में भी सांस्कृतिक रूपान्तरण की प्रक्रिया गतिमान थी।

इस प्रकार सामान्य परिदृश्य यह है कि पंजाब चरण पूर्व में गंगा–यमुना दोआब की ओर बढ़ता गया और साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में फैलते हुए स्थानीय रूप से समायोजित हो गया। क्षेत्रीय आकर्षण एवं व्यापारिक सम्पर्क के कारण इनका सम्बन्ध पश्चिम तथा दक्षिण के संसाधन क्षेत्रों से बना रहा।

दक्षिणी सिन्धु घाटी में झूकर और उसके निकट पीराक चरण में भी इसी प्रकार की क्रमिक परिवर्तन की प्रक्रिया दिखाई देती है। इस प्रक्रिया के दौरान एक नये विशेष समूह के उदय के साथ ही नयी पात्र परम्परायें, ज्योमितिक अलंकरण युक्त गोलाकार सील एवं हड़प्पन चरण के साथ झूकर चरण का अतिव्याप्ति साथ ही यह झूकर चान्हूदड़ों, मोहनजोदड़ों, आमरी6 आदि पुरास्थलों में बहुत बाद तक निरन्तर बनी भी रही। काची मैदान में स्थित पीराक नामक पुरास्थल से शैलगत आधार पर भी सम्बन्ध दिखाई देता है।7 इन क्षेत्रीय स्थलों पर निरन्तर बसाव रहने से यहाँ शक्तिशाली संस्कृति का आधिपत्य रहा होगा। पात्रों की अनेक तकनीकी विशेषतायें एवं अन्य वस्तुओं की उपस्थिति हड़प्पन चरण की निरन्तरता दर्शाती है। जो बड़ा परिवर्तन देखने को मिलता है, वह पात्रों पर बने अलंकरण, सीलों पर लिपि का अभाव, गोल मुहरों का प्रचलन जिन पर गोल ज्यामितिक आकृतियाँ हैं। झूकर चरण का आरम्भ 2000 ई०पू० से लेकर 1900 के बीच में कभी हुआ होगा, जो परिपक्व हड़प्पा काल का अन्तिम चरण था और समापन पीराक चरण में जो 1800 ई०पू० में आरम्भ होकर 800 ई०पू० तक रहा।8 झूकर के उत्तर पश्चिम में काची

के मैदानी भाग में पीराक पुरास्थल अवस्थित है। पश्चिमी उच्च भू–भाग एवं काची के मैदान में स्थित अन्य बस्तियों के साथ पीराक का गहरा सांस्कृतिक सम्बन्ध दिखाई देता है।9 पीराक से प्राप्त घोड़े एवं सवार युक्त ऊँट की मृण्मयमूर्ति से प्रदर्शित होता है कि मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्रो के लोगों के बीच पारस्परिक सम्बन्ध एवं निरन्तरता बनी रही। पीराक के द्वितीय चरण (1600 ई०पू०) से प्राप्त इन महत्त्वपूर्ण जानवरों का साक्ष्य सैन्धव क्षेत्र में नये तत्त्व का द्योतक है। कॉसे एवं मिट्टी की बनी मुहरें परिपक्व सैन्धव–काल की मुहरों से एक दम भिन्न है। ये मुहरें चौकोर बटी हुई ज्यामितिक अलंकरण से युक्त है। पंजाब चरण के विपरीत पीराक चरण में लेपिसलेजुली निरन्तर अस्तित्व में बना रहा। कच्चे तॉबे के स्त्रोतों से तॉबा एवं समुद्री तट से शंख की आपूर्ति निरन्तर होती रही। पात्रों के आकार–प्रकार में परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है, जिससे पानी के लिए गोलाकार बड़े पात्र, हत्था वाला कप, खाना पकाने का पात्र शामिल है। खाना पकाने एवं अन्न संग्रह करने का परिष्कृत रूप दिखाई देता है।10 सिन्धु घाटी का दक्षिणी क्षेत्र सैन्धव नगरों के पतन के बाद वीरान या अलग–थलग नहीं पड़ा, बल्कि मैदानी एवं पश्चिमी उच्च भू–भाग के संसाधन स्त्रोतों का संदोलन करने वाले कृषकों एवं चारवाहों के द्वारा आबाद रहा। जॉरी महोदय का विचार है कि विभिन्न प्रकार की फसलों को उगाने एवं आवागमन के लिए घोड़े एवं उॅट का प्रयोग स्थानीय निवासियों द्वारा किया गया था न कि बाहर से आने वाले अन्य लोगों द्वारा।11

दक्षिण–पूर्व में कच्छ के भू–भाग एवं गुजरात के क्षेत्र में एक शक्तिशाली प्रक्रिया के तहत परिवर्तन होता रहा। प्राचीन सरस्वती नदी के सूखने के बाद लोग क्रमशः उत्तर गुजरात की ओर प्रव्रजित हुए जहाँ इस समय आश्चर्यजनक ढंग से बस्तियाँ बढ़ रही थी।12 उथले कच्छ के रण में सिल्ट की परतों का क्रमिक जमाव होता रहा, जिससे जहाजी मार्ग अवरुद्ध होने लगा और धीरे–धीरे सिन्धु घाटी से सम्पर्क टूट गया। हड़प्पन चरण के मुख्य रूप से पहचाने जाने वाले पुरावशेषों में अभिलिखित सील, मापवाट, छिद्रित पात्र, टी०सी० केक, प्रसिद्ध गोबलेट आदि का धीरे–धीरे अभाव होने लगा। इन वस्तुओं का क्रमशः अभाव सामाजिक परिवर्तन को दर्शाता है। ऐसे ही हड़प्पन कालीन चित्रित पात्रों की संख्या कम होती जाती है और स्थानीय पात्र परम्परायें एवं चित्रण शैली का वर्चस्व बढ़ता जाता है। चौकोर सीलों का अभाव होने के बाद लेखन कला ग्रेटी के रूप में पात्रों पर ही दिखाई देती है। हड़प्पा काल में प्रारम्भ हुई कुछ महत्त्वपूर्ण परम्परायें निरन्तर रहीं जैसे कि शंख की चूड़ियाँ और फियॉन्स के मनके, जबकि ये वस्तुएँ व्यापारिक रूप से उत्तरी क्षेत्र से नहीं लायी गयी थी। जिससे इंगित होता है कि व्यापारिक सम्बन्धों में एक लम्बा व्यवधान उत्पन्न हो गया था, जो 600 ई०पू० के पहले कभी प्रारम्भ नहीं हुआ।13

उपरोक्त अध्ययन14 से स्पष्ट है कि हड़प्पा–सभ्यता अपने आन्तरिक कारणों से परिणाम–स्वरूप पतन की ओर अग्रसर होने लगी, क्षेत्रीय एकता का युग क्रमशः विखण्डित होने लगा, तीन क्षेत्रीय संस्कृतियों का स्वरूप उत्तर–हड़प्पीय रूप में प्रस्तुत हुआ, जिनसे क्रमशः सांस्कृतिक रूपान्तरण एवं पतन स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। उत्तर–हड़प्पीय संस्कृति विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृतियों में समायोजित होती गयी और अपने नये कलेवर के रूप में प्रस्फुटित हुई, जिसका उदाहरण– भगवानपुरा, माण्डा, दधेरी आदि पुरास्थल है, जहाँ उत्तर–हड़प्पीय एवं चित्रित–ध ूसर मृदभाण्ड संस्कृति के बीच अतिव्याप्ति है। अतः स्पष्ट है कि उत्तर–हड़प्पीय संस्कृति के उत्तराधिकारी के रूप में चित्रित–धूसर मृद्भाण्ड संस्कृति का गंगा–घाटी में आगमन हुआ और यह प्रक्रिया लगभग 1200 ई०पू० के आस–पास घटित हो रही थी। इस प्रक्रिया ने गंगा–घाटी में होने वाली नगरीकरण के लिए पृष्ठभूमि का काम किया।

संदर्भ ग्रन्थों की सूची :–

1. मिश्रा, वी.एन. 1994, ''इॅण्ड्स सिविलाइजेशन एण्ड द ऋग्वैदिक सरस्वती'' साऊथ एशियन आर्कियोलॉजी– 1993, परपोला अस्को, एण्ड कोस्कीकालियो, पेट्री (संपा.)– 2, 511–26
2. प्लेम लुईस, 1991, ''यूबियल जियोमारफोलॉजी ऑफ द लोअर इण्डस वेसिन (सिन्ध–पाकिस्तान) एण्ड द इॅण्ड्स सिविलाइजेशन, हिमाल्याज टू द सीः जियोलॉजी, जियोमारफोलॉजी एण्ड द क्वार्टनरी, शरूदर, एफ. जॉन (संपा.) राऊटलेज्ड, लन्दन, 265–87
3. जेफर, जीम.जी. 1992, (तृतीय संस्करण) ''द इॅण्ड्सवैली बलूचिस्तान एण्ड हेलमन्द ट्रेडिशनः नियोलिथिक थ्रो ब्रोन्ज एज, क्रोनोलॉजिस इन ओल्ड वर्ल्ड आर्कियोलॉजी, ऐरिच आर. (संपा.) यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, शिकागो, 441–63
4. दीक्षित, के.एन., द लिगेसी ऑफ इॅण्डस सिविलाइजेशन इन नार्थ इण्डिया
5. केनवायर, जे. मार्क 1988, ऐंशेण्ट सिटीज ऑफ द इॅण्ड्स वैसली सिविलाजेशन, कराँचीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस एण्ड द अमेरिकन इंस्टिट्यूट ऑफ पाकिस्तान स्टडीज : 176
6. मुल, एम. रफीक, 1992, ''झूकर एण्ड द लेट हड़प्पन कल्चर मोजैक ऑफ द ग्रेटर इॅण्ड्स वैली'' साउथ एशियन आर्कियोलॉजी 1989, जॉरी कैथरीन (संपा.) विसः प्रीहिस्ट्री प्रेस मैडिकल, 213–22

7. पोसेल, जी.एल. एण्ड रावल, एम.एच., 1989, हड़प्पन सिविलाइजेशन एण्ड रोजड़ी, ऑक्सफोर्ड एण्ड आई.बी.एच. एण्ड ए.आई.आई.एस., नई दिल्ली
8. केनवायर, जे. मार्क, 1997, ''अर्ली सिटी स्टेट्स इन साऊथ एशिया : कम्पेयरिंग द हड़प्पन फेज एण्ड द अर्ली हिस्टोरिक पीरियेड'' द ऑर्कियोलॉजी ऑफ द सिटी स्टेट्सः क्रॉस कल्चरल एप्रोच, निकॉलस, डेबोराह एलः एण्ड चारल्टन एच थामस (संपा.) डी.सी. स्मिथस्नियन इंस्ट्यूसन प्रेस, वाशिंगटन
9. कॉसल, जीन मेरी, 1979, ''रिसेन्ट एक्सकेवेशन एट पीराक'' आर्कियोलाजी (अक्टूबर 1970): 343–44, जॉरी जे.एफ. एण्ड सनटोनी मेरिले, फॉउल्स डी पीराक, डियूजन डी. बोकॉर्ड, पेरिस
10. जॉरी जे.एफ., कॉन्टीन्यूटी एण्ड चेन्ज इन द नार्थ काची प्लान
11. जॉरी जे.एफ., द फाइनल फेज ऑफ द इॅण्ड्स अक्यूपेशन एट नौसेरो
12. भान, के.के., लेट हड़प्पन गुजरातः पोसेल एण्ड रावल, हड़प्पन सिविलाइजेशन इन गुजरात' द सोरठ एण्ड हड़प्पन्'' पोसेल एण्ड रावल, हड़प्पन सिविलाइजेशन इन रोजडी
13. केनवायर, जे मार्क, अर्ली सिटी स्टेट्स इन साउथ एशिया
14. केनवायर, जे मार्क, 1998, पूर्वोद्धृत, पृ. 173–185